प्रथम अध्याय

''चंद्रकांता : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

''चंद्रकांता : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

प्रस्तावना -

चंद्रकांता हिंदी साहित्य की प्रतिभा संपन्न लेखिका हैं। आधुनिक युग की प्रगतिशील लेखिका चंद्रकांता का कथा साहित्य प्रशंसनीय है। वे स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों में एक श्रेष्ठ कहानीकार है। श्रेष्ठ कहानीकार होने के साथ वे एक श्रेष्ठ उपन्यासकार भी हैं। कहानीकार, उपन्यासकार, कवयित्री के नाते हिंदी में उन्होंने अपना स्थान बनाया है।

उनकी पहली कहानी 'खून के रेशे' सितंबर 1967 में कल्पना (हैद्राबाद) मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई। चंद्रकांता ने मध्यवर्गीय समाज को अपना विषय बनाकर भारत की संस्कृति और परंपरा को सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति दी है। आमतौर पर उनका साहित्य मध्य वर्गीय समाज का उद्घाटन करती है।

चंद्रकांता ने कथाकार के रूप में जो ख्याति प्राप्त की है, वह अपने आप में गौरव की बात है। उन्होंने करीब डेढ़ सौ कहानियाँ और छः उपन्यास एवं एक कविता संग्रह लिखा है। अब भी नियमित रूप से लेखन कार्य चल रहा है।

लेखिका 'सूरज उगने तक' कहानी संग्रह की भूमिका में कहती है कि ''मैंने समकालीन जीवन की विसंगतियों, विघटित मूल्यों, बदलते मानवीय रिश्तों और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थितियों से उत्पन्न व्यवस्था के परिणामों को अपनी रचनाओं का कथ्य बनाया। जो खुद भोगा वह भी और जो दूसरों को भोगते देख तहेदिल से महसूस किया वह भी।''[1]

चंद्रकांता ने जो भी लिखा है स्वयं भोगा, देखा जाना है। उनके साहित्य के तीन दौर किए जा सकते हैं। प्रथम वे अपने पिलानी के कस्बे में रही, वहीं दो वर्ष अध्यापन करने के बाद भुवनेश्वर में रहकर रचनाएँ की।

चंद्रकांता के व्यक्तित्व के बारे में हमें बहुत कम परिचय मिला है, फिर भी उनकी रचनाओं के माध्यम से इनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समझने के लिए उनकी जीवनी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समझना आवश्यक है।

1.1. व्यक्तित्व -

1.1.1 जन्म -

हिंदी कहानी के क्षेत्र में लोकप्रिय कथा-लेखिका चंद्रकांता का जन्म एक हिंदीतर भाषी परिवार में हुआ। उनका जन्म श्रीनगर कश्मीर में सितंबर 1938 ई. में प्रोफेसर रामचंद्र पंड़ित के घर में हुआ।

1.1.2 माता-पिता -

चंद्रकांताजी का जन्म एक शिक्षित परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम प्रो. रामचंद्र पंडित है। वे नारी शिक्षा के हिमायती होने के साथ अनुशासन प्रिय थे। वे साहित्य प्रेमी भी थे। चंद्रकांता की माँ तपेदिक की बीमारी के कारण बचपन में ही चल बसी। लेखिका उस समय छः-सात वर्ष की थी।

1.1.3 परिवार -

लेखिका का जन्म एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ है। उनका परिवार शिक्षित होने के कारण घर का वातावरण लेखन के लिए अनुकूल था। पिताजी स्त्री शिक्षा के हिमायती होने के कारण लेखिका और उनकी बहन को उन्होंने पढ़ाया।

चंद्रकांता के परिवार में शादी से पहले पिताजी, माँ, एक बहन, एक भाई इतने सदस्य थे। शादी के बाद पति डॉ. विशन, एक बेटा और बेटी अलग परीवार हुआ।

1.1.4 शिक्षा -

चंद्रकांता की शिक्षा बी. ए. बी. एड् तक श्रीनगर में अंग्रेजी माध्यम से ही हुई। बी. ए. तक की परीक्षा श्रीनगर कश्मीर के विमेन्स कालेज और गांधी मेमोरियल कालेज में हुई। एम्. ए. हिंदी

साहित्य में पिलानी राजस्थान विश्वविद्यालय से किया। बीएड् में जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया और एम्. ए. में बिरला आर्टस कालेज में द्विवितीय स्थान प्राप्त किया।

चंद्रकांता के लेखन का श्रीगणेश भी हिंदी में ही हुआ। मातृभाषा हिंदी न होते हुए भी हिंदी हमेशा आपका प्रिय विषय रहा है। लेखिका ने पिलानी में हिंदी विषय में एम्. ए. करने की इच्छा का एक कारण यह बताया है कि बारह वर्ष की उम्र में जो कविता लिखी थी, मैं उस भीतर घटते विचार को हिंदी में स्वर देना चाहती थी।

उन्होंने बारह वर्ष की उम्र में पहली कविता 'भर आता जब यह मौन' हृदय लिखी। एम्. ए. करते समय बिरला कॉलेज, पिलानी में कालेज के प्रिसिंपल कन्हैयालाल सहल ने चंद्रकांता से प्रतियोगिता के लिए एक कविता लिखवायी थी। बाद में वह पुरस्कृत भी हुई। डा. सहल ने उन्हें निरंतर लिखने और लेखन के उत्तरोत्तर विकास संबंधी जो बातें कहीं, उनसे उन्हें बड़ी प्रेरणा मिली।

1.1.5 बचपन -

संयुक्त परिवार का प्रचलन भारतीय संस्कृति की पहचान है। लेखिका का बचपन भी संयुक्त परिवार में ही बीता। माता-पिता और बहन-भाई का परिवार में समावेश था। संयुक्त परिवार का परिचय उनके बचपन का अभिन्न अंग बन गया।

1.1.6 शादी -

चंद्रकांता को बहुत कम आयु में पिता का घर छोड़ना पड़ा। बचपन में माँ का देहांत होने के कारण पिता ने कम उम्र में ही लड़कियों की शादी कर दी। लेखिका बचपन में ही बहुत कल्पनाशील बन गई। कुछ करने और बनने की जिद उन्हें लगातार बेचैन रखती। उनकी शादी डॉ. विशिन नामक लड़के से हुई। डॉ. विशिन शादी के समय बी.एस्. सी. के छात्र थे।

शादी के बाद लेखिका की शिक्षा नियमित रूप से शुरू रही। उसके ससुरालवालों ने इनके कुछ बनने और पाने की जिद्द को समझा और उनके रास्ते में रूकावटें नहीं डाली। चंद्रकांता ने कहा है कि - इसीलिए तमाम पारंपारिक मान्यताओं और संहिताओं के बीच मैं घर की बड़ी बहू एक बेटी की तरह घर में रही साथ ही स्कूल कॉलेज में अपना अध्ययन मनन जारी रखा।''[2]

1.1.7 नौकरी -

लेखिका बाईस वर्ष कश्मीर में बिताने के बाद पति के साथ पिलानी (राजस्थान) चली गई। छ: वर्ष वहाँ रही, पहले अध्ययन और दो वर्ष अध्यापन किया। दो वर्ष अध्यापन करने के बाद हैद्राबाद चली गई। वहीं से उनका नियमित लेखन आरंभ हुआ। चंद्रकांता ने नौकरी छोड़कर स्वतंत्र लेख़न का दायित्व उठा लिया। उनके पति डा. विशिन ने भी उनके रास्ते में कभी कोई बाधा नहीं डाली। इस तरह लेखिका मन से साहित्य से जुड़ी रही।

1.1.7.1 कश्मीर से पिलानी (राजस्थान) -

लेखिका शादी के बाद अपने पति के साथ पिलानी (राजस्थान) चली गई। वहाँ छ: वर्ष रहकर और दो वर्ष अध्यापन करके हैद्राबाद चली गईं।

1.1.7.2 पिलानी (राजस्थान) से हैद्राबाद -

चंद्रकांता में कुछ करने की ललक थी। यही ललक उन्हें पति के साथ पिलानी (राजस्थान) से हैद्राबाद ले गई। हैद्राबाद में ही उनका नियमित लेखन आरंभ हुआ। यों ही पहली कविता तो बारह वर्ष की उम्र में लिखी फिर स्कूल, कॉलेज की पत्रिकाओं के लिए कुछ कविताएँ लिखी।

उनकी हैदराबाद में सितंबर 1967 में पहली कहानी 'खून के रेशे' कल्पना पत्रिका में प्रकाशित हुई और अक्तूबर में 'नई कहानियाँ' में 'कैकटस' और 1968 में ज्ञानोदय में 'सलाखों के पिछे' कहानियाँ प्रकाशित हुई। नौकरी छोड़कर तमाम प्रतिबद्धता के साथ आप लेखन के साथ जुड़ी रही।

1.1.7. 3 कश्मीर से उड़िसा -

चंद्रकांता को भारत के और विदेश के कई प्रांतों में रहने का मौका मिला। वहाँ के विशिष्ट लोकरंगों और विश्वासों को अपनी कृतियों में ढाला है। 'अकेली चारमिनार', 'गलत गणित' कहानियों में जहाँ हैद्राबाद की संस्कृति झलकती है। 'आत्मबोध', 'कित्ये जाणांपुत्तर' में पंजाब के विशिष्ठ रंग हैं। कश्मीर तो अनेकों कहानियों में जीवित हो उठा है। 'पोशनूल की वापसी' में यदि

कश्मीर का शांत समय है तो 'काली बर्फ', 'शरणागत दिनति', 'नवशीन मुबारक' आदि कहानियों में आज का आतंक-जर्जर कश्मीर है।

चंद्रकांता कश्मीर से उड़िसा गई। वहाँ छः वर्ष रही और वहाँ के अनुभूत परिवेश का चित्रण एक उपन्यास में किया। स्वयं लेखिका कहती है कि - ''मैं उड़िसा में छः वर्ष रही, उड़िसा कथा, कहानियों, साबार, कोणार्क और जगन्नाथ का प्रदेश है। यहाँ मुझे जो 'कुनी' मिली जो 'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास लिखने का कारण बन गई, यो कारण महज एक व्यक्ति न होकर जीवन की अनंत स्वभावनाओं में से उठाए गए कुछ जिज्ञासाएँ भी शामिल होती हैं। जिन्हें हम कथा कहानी के माध्यम से फ्रीज करते हैं और जो पाठक के छुते उनके संवेदन के ताप से बकौल निर्मल वर्मा पिघलकर बहने लगते हैं।''[3] 'अपने-अपने कोणार्क' में कश्मीर से उड़िसा का सफर है।

1.1.8 साहित्य सृजन -

चंद्रकांता जी को साहित्य सृजन की दिशा अपने पिता से ही मिली। उन्होंने बारह वर्ष की उम्र में ही पहली कविता लिखी 'भर आता जब यह मौन-हृदय'। चंद्रकांता ने इसके बारे में कहा कि ''जरूर यह छुई-मुई उम्र की भावुक अभिव्यक्ति थी पर महत्त्वपूर्ण इसलिए कि वे पहले-पहले शब्द थे। जो मेरे भीतर से पहाड़ी झरने की तरह फूटे थे और उन्हें अपने घरवालों से छिपकर मैंने कागज पर उतारा था। मेरे रचनाकार के जन्म की शुरूवात वही थी।''[4] इसीलिए लेखिका आज भी मानती हैं रचनाकार का जन्म दु:ख से होता है। उनके जीवन में जो घटनाएँ घटी, उनका प्रभाव भी उन पर पड़ा है।

लेखिका एम्. ए. करते समय बिरला कॉलेज पिलानी में एक बार कॉलेज के प्रिन्सिपल डॉ. कन्हैयालाल सहल ने प्रतियोगिता के लिए एक कविता लिखवाई, जो बाद में पुरस्कृत भी हुई। डॉ. सहल ने लिखने और लिखने के उत्तरोत्तर विकास संबंधी जो बातें कही उससे उन्हें बड़ी प्रेरणा मिली।

अमृतरायजी ने कश्मीर पर लिखे गए एक फीचर 'गर्म बहसों में लिपटा एक ठंडा शहर' पर बधाई का तार भेज दिया। जो उन दिनों नई कहानियाँ का संपादन करते थे। उसके साथ 'नई कहानियाँ' के स्तंभ ने भी दिशा दी।

इसी तरह चंद्रकांता को साहित्य सृजन के लिए अनेक बड़े बुजुर्ग लोगों ने और विद्वानों ने प्रेरणा दी है।

1.1.9 अभिरूचियाँ -

चंद्रकांता की साहित्य लेखन के साथ-साथ कई-कई अभिरूचियाँ भी रही हैं - रेनीकॉट, बैड्मिण्टन से लेकर बिजबागबानी अभिनय, संगीतवाद्य, विशेषकर वायलिन, सितार और बाँसुरी आदि। अंततः उन्हें लेखन में ही सुकुन मिला।

1.1.10 व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू -

1.1.10.1 कवयित्री -

एक अच्छे कवि के लिए आवश्यक प्रतिभा और भावुक प्रकृति चंद्रकांता में बचपन से ही थी। उन्हें पढ़ने का बेहद शौक था। हमेशा कुछ-न-कुछ लिखने के लिए उनका ह्रदय मचल जाता था। 'नई कहानियाँ' पत्रिका में उनकी कविताएँ प्रकाशित होने लगी। वह अनेक मासिक पत्रिकाओं में अपनी कविताएँ भेजने लगी। उनकी प्रकाशित कविताएँ पुरस्कृत भी हुई हैं। ये सब कविताएँ 'यहीं कहीं आसपास' इस काव्य संग्रह में संकलित हैं।

1.1.10.2 कहानीकार -

चंद्रकांता के व्यक्तित्व का एक पहलू कहानीकार के नाते हमारे सामने आता है। उनमें कहानी गढ़ने की अद्‌भुत क्षमता है। उनके कहानियों में विविधता के दर्शन होते हैं। काम, क्रोध, लोभ, स्वार्थी और निःस्वार्थी वृत्ति, प्रेम, अर्थ लिप्सा, ढोंगी वृत्ति, दिखावे की भावना आदि मनुष्य के विविध पहलुओं को चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में उजागर किया है। वर्तमान समाज की सभ्यता और उससे उत्पन्न विषमता पर उन्होंने प्रहार किया है। नारी जीवन में व्याप्त विभिन्न समस्याएँ एवं मध्य एवं निम्न वर्ग की आर्थिक समस्याएँ, धर्माड़ंबर, अंधश्रद्‌धा तथा विभिन्न वर्ग संघर्ष आदि सामाजिक समस्याओं को उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। समस्या ने उनकी कहानियों के विचार पक्ष को बोझिल नहीं बना दिया है।

उन्होंने अपनी कहानियों में मानव जीवन के ऊँचे उद्‌देश्य और नैतिक मानदंड़ों की स्थापना की है। उनकी सभी कहानियाँ सोद्‌देश्य हैं। व्यक्ति मन की उलझनों का चित्रण करना उनका प्रमुख लक्ष्य दिखाई देता है। उनकी प्रत्येक कहानी व्यक्ति की किसी-न-किसी कमजोरी पर मार्मिक चोट करती है। रोचकता उनकी कहानियों का सबसे बड़ा आकर्षण है। कहानी के आरंभ के प्रति वे बड़ी सतर्क हैं। पाठकों पर अधिक-से-अधिक स्थायी प्रभाव डालना उनका उद्‌देश्य रहता है।

चंद्रकांता की कहानियों का अंत आकर्षक और प्रभावोत्पादक है। उनकी अधिकांश कहानियाँ दु:खांत हैं। मानव मन की निसहाय अवस्था, लाचारी, विवशता, छटपटाहट तथा कमजोरी में कहानियों का अंत है।

उनकी कहानियों की भाषा सीधी, सरल, सुबोध पात्रानुकुल, भावानुकूल, प्रभावोत्पादक दिखाई है। नए-नए मुहावरों, कहावतों, लोकोक्तियों और अंग्रेजी भाषा का थोड़ा प्रभाव दिखाई देता है।

चंद्रकांता की कहानियों में विविधता, रोचकता, सोद्‌देश्यता दिखाई देती है। प्रेमचंद ने जिस प्रकार जमींदार, कृषक, मजदूर, क्लर्क सभी को लेकर लिखा है वैसे चंद्रकांता नहीं लिख पाई हैं। उनकी कहानियों का क्षेत्र शहरी जीवन तक और शहरी जीवन में भी बहुत कुछ बुद्‌धिजीवी वर्ग तक सीमित है। विदेश में रहनेवाले भारतीय लोगों का चित्रण भी किया है। कश्मीर पंजाब में होनेवाले आतंक को चित्रित किया है। साथ-ही-साथ अतीत की स्मृतियों पर लिखी गई कहानियाँ भी अधिक हैं।

1.1.10.3 ***उपन्यासकार -***

चंद्रकांता ने कहानी के साथ-साथ उपन्यास भी लिखे हैं। उपन्यासकार के रूप में भी ख्याति प्राप्त की है। उनके छ: उपन्यास प्रसिद्‌ध हैं। उनके उपन्यास पुरस्कृत भी हो चुके हैं। उन्होंने उपन्यासों में मध्य वर्गीय एवं निम्न-मध्य वर्गीय लोगों की समस्याओं का चित्रण किया है।

कश्मीर-पंजाब के आतंकवाद का चित्रण उपन्यासों में मिलता है। उनके पहले उपन्यासों में तथाकथित संस्कारशील परिवारों की दोहरी नीतियाँ, दांपत्य जीवन का खोखलापन और अस्तित्व हीनता की यंत्रणा सहती स्त्री के अंतर्द्‌वंद्‌व की गाथा है। इसी तरह उनके उपन्यासों में आर्थिक, समस्या संबंधों में तनाव, लोक संस्कृति, राजनीतिक संघर्ष, सामाजिक परिवर्तन, रक्षणशील

परिवारों की रीति-नीतियों, विश्वासों और समय के साथ बदलाव की अनिवार्यताओं से उपजे द्वंद्व आदि का चित्रण मिलता है। इसी कारण चंद्रकांता उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।

1.2 कृतितत्व की पहचान -

आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रतिभा संपन्न लेखिका चंद्रकांता के साहित्य जीवन का आरंभ कम उम्र में ही हुआ था। अपने पिता के संस्कारों का प्रभाव उन पर बचपन में ही पड़ा।

उपन्यास और कहानी ये संप्रेषण के सशक्त माध्यम हैं और इनके द्वारा अनुभूति की अभिव्यक्ति समग्र रूप से संभव होती है। इसीलिए वह कविता लिखना छोड़कर कहानी और उपन्यास लिखने लगी। 'खून के रेशे' चंद्रकांता की पहली कहानी है। यह कहानी है हैद्राबाद से प्रकाशित होनेवाली कल्पना पत्रिका में सितंबर 1967 में प्रकाशित हुई। उसी वर्ष अक्तूबर में 'नई कहानियाँ' में 'कैकटस' और अगले वर्ष 'ज्ञानोदय' में 'सलाखों के पीछे' आदि कहानियाँ प्रकाशित हुई। इसके बाद धीरे-धीरे अन्य व्यावसायिक-अव्यावसायिक पत्रिकाओं में बराबर लिखती रही।

चंद्रकांता ने जिस दौर में नियमित लेखन शुरू किया, कथा-जगत् में वह दौर काफी बहस-मुहाबसों एवं नये प्रयोगों का दौर था। तभी कहानी के विरोध में 'अकहानी' का नारा बुलंद किया जा रहा था और कामुका एका की भौंड़ी नकल के फलस्वरूप संत्रास और सेक्स को फैशन बनाकर भुनाया जा रहा था। नई कहानीवाले दौर की तरह ही अकहानी के लेखक अपने पूर्ववर्ती लेखकों को अस्वीकार करने लगे थे। छद्म आधुनिकता का विरोध था और लेखन को समकालीन जीवन के सच से जोड़ने का आग्रह था। इस स्तंभ ने कई रचनाकारों को दिशा दी, चंद्रकांता भी उनमें से एक थी। उनको 'नई कहानियाँ' के इस स्तंभ ने दिशा दी, यह वह आज भी मानती हैं।

लेखिका ने अपने बारे में कहा है कि - "मेरे विषय में सोचा गया, हिंदी प्रदेशों से दूर एक अजानी लेखिका, अहिंदी प्रदेश में जन्मी-पली, एक अहिंदी भाषी, हिंदी लेखिका, नाम भी क्या ? चंद्रकांता। न कोई आगे उपसर्ग न पीछे कोई प्रत्यय, सिर के उपर गुंबद भी नहीं, न किसी गुट में न खेमें में, फिर भी कल्पना में छपी।"[5]

चंद्रकांता ने अपने साहित्यिक यात्रा में अर्थ, राजनीति आदि में किसी के साथ समझौता नहीं किया। बाजारू माँग के अनुसार दे-दना-दन उपन्यास या कहानियाँ उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को कभी नहीं भाया। उनका उसूल है साहित्य के प्रति प्रतिबद्धता।

1.2.1 कृतित्व -

1.2.1.1 कविता संग्रह -

कवि प्रतिभा चंद्रकांता में बचपन से थी। बचपन से ही वे कविता लिखा करती थी। उम्र के बारह वर्ष में ही उन्होंने एक कविता लिखी थी 'भर आता जब यह मौन-हृदय' बाद में धीरे-धीरे कविताएँ लिखी। कुछ पुरस्कृत भी हुई हैं। उन्होंने सिर्फ एक ही कविता संग्रह लिखा है।

अ.क्र.	कविता संग्रह के नाम	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशक
1.	यहीं कहीं आसपास	1999	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

1.2.1.2. कहानी -

अ.क्र.	कहानी संग्रह के नाम	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशक
1.	सलाखों के पीछे	1975	स्वाति प्रकाशन, हैद्राबाद।
2.	गलत लोगों के बीच	1984	राजधानी प्रकाशन, सफर जंग, एक्स्, नई दिल्ली।
3.	पोशनूल की वापसी	1988	पराग प्रकाशन शहदरा, दिल्ली।
4.	दहलीज पर न्याय	1989	नेहाल पब्लिशिंग हाऊस, 2/35, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002.

5.	ओ सोनकिसटी	1991	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1/बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110003
6.	सूरज उगने तक	1994	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 18 इंस्टीटयूशनल एरिया, लोदी रोड़, नई दिल्ली - 110003
7.	कोठे पर कागा	1993	किताब घर 24/4855, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002
8.	काली बर्फ	1996	किताब घर, नई दिल्ली - 110002
	चर्चित कहानियाँ	1997	सामायिक प्रकाशन, 3320/21 जटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली - 110002
	प्रेम कहानियाँ	1996	समय प्रकाशन, जी 1/5, मॉड़ल टाऊन-III दिल्ली -1
	आँचलिक कहानियाँ	1998	कादंबरी प्रकाशन, 5541, शिव मार्केट, न्यू चंद्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली-110007

चंद्रकांता जी ने अब तक आठ कहानी संग्रह और अब तक जो पुस्तकों का संकलन किया है उसमें चर्चित कहानियाँ, प्रेम कहानियाँ और ग्रामीण जीवन का यत्र-तत्र चित्रण करनेवाली कहानियाँ जिसे आँचलिक कहानियाँ नाम से प्रकाशित किया है।

1.2.1.3 उपन्यास -

चंद्रकांता जी ने कहानी के साथ-साथ उपन्यास भी लिखे हैं। यद्यपि लेखिका ने साहित्य के क्षेत्र में कविता के माध्यम से पदार्पण किया फिर भी उन्हें एक सफल उपन्यासकार माना जाता

है। आर्थिक विषमता, रक्षणशील परिवारों की रीति-नीतियों, विश्वासों मध्य वर्गीय जीवन की दशा, संघर्ष, आतंक आदि समस्याओं का चित्रण आदि बातें उनके उपन्यासों में देखने को मिलती हैं।

उन्होंने घटना प्रधान, चरित्र प्रधान, समस्या प्रधान उपन्यास लिखे हैं। वस्तु विन्यास की सुचारूता, इतिवृत्त की रोचकता बाह्य एवं आंतरिक द्वंद्व की तीव्रता हम उनके उपन्यासों में पाते हैं।

उनके उपन्यास का आरंभ समस्या प्रधान उपन्यास 'अर्थांतर' से हुआ। विषय और समस्या को तर्क के माध्यम से उभारना उनकी आदत थी। 'अर्थांतर', 'अंतिम साक्ष्य', 'बाकी सब खैरियत है', 'ऐलान गली जिंदा है', 'यहाँ वितस्ता बहती है', 'अपने-अपने कोणार्क' आदि उपन्यासों में इनकी तार्किकता के दर्शन होते हैं। अपने सभी उपन्यासों में उन्होंने नारी का कोई-न-कोई रूप उद्घाटित किया है। समाज की उपेक्षित नारी और पुरुष याने मध्यवर्गीय परिवार को उन्होंने ऊँचा स्थान दिया है।

उपन्यास के माध्यम से चंद्रकांता ने समाज की विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया है। उनके प्रभावी उपन्यासों के कारण ही उन्होंने साहित्य में अपना अमीट स्थान बना दिया है। उनके अब तक छः उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं -

अ.क्र.	*उपन्यास के नाम*	*प्रकाशन वर्ष*	*प्रकाशक*
1.	अर्थांतर	1981	प्रभात प्रकाशन, 4/19 आंसफ अली रोड़, नई दिल्ली-110002.
2.	अंतिम साक्ष्य	1990	राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3.	बाकी सब खैरियत है	1983	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
4.	ऐलान गली जिंदा है	1984	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

5.	यहाँ वितस्ता बहती है	1992	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
6.	अपने-अपने कोणार्क	1995	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

1.2.2 ***शिघ्र प्रकाश्य -***

1. उपन्यास - कथा सतीसर
2. कथा संग्रह - अंतिम अपराध

1.2.3 ***पुरस्कार -***

1. जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी से तीन पुस्तकों को 'अर्थांतर', 'ऐलान गली जिंदा है' और 'ओ सोनकिसरी' बेस्ट बुक अवार्ड 1982, 1986, 1994 में।
2. मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से दो पुस्तकें 'बाकी सब खैरियत हैं' और 'पोशनूल की वापसी' पुरस्कृत 1983 और 1989 में।
3. हरियाणा साहित्य अकादमी से 'अपने-अपने कोणार्क' 1997 में पुरस्कृत।

* राष्ट्र की प्रथम महिला, श्रीमती विमल शर्मा द्वारा सम्मानित।

* देश विदेश की गोष्ठियों सेमिनारों में भाग लिया। उड़िसा, कर्नाटक, हैद्राबाद, चंड़ीगढ़, परिचाला, बटेली, भोपाल, कोटा, जम्मू-कश्मीर दिल्ली आदि प्रदेशों में साहित्यिक आलेख पढ़े, कवि सम्मेलनों में भाग लिया।

* अमरीका में गदर मेमोरियल हाल सेल क्रांतिकों में स्वतंत्रता की 50 वीं जयंती के उपलक्ष्य में हुए समारोह में काव्य पाठ किया।

* केलिफोर्निया के मिल पीट्स शहर में पंजाबी साहित्य सभा के आमंत्रण पर कथा-वाचन किया।

* सैनहोजे के अमरीकी-भारतीय सभाओं में कथापाठ।

* फ्रिमांट शहर में स्थानीय भारतीय साहित्य मंच के आमंत्रण पर कथा पाठ एवं काव्य पाठ।

1.2.4 ***भ्रमण -***

भारत के विभिन्न प्रांतों एवं विदेश में अमरीका के विभिन्न प्रदेशों का भ्रमण। कश्मीर से हैद्राबाद, कलकत्ता, भुवनेश्वर से मुंबई, उत्तर प्रदेश में आगरा से देहरादून और अब दिल्ली-हरियाणा की देहरी पर।

1.2.5 लेखन -

लेखन यों तो बारह वर्ष की उम्र में एक कविता से शुरू हुआ पर नियमित लेखन 1967 ई. से। पहली कहानी 'खून के रेशे' कल्पना (हैद्राबाद) मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई।

सामायिक राजनीति, समाज व्यवस्था, आर्थिक-नैतिक-व्यवस्थाओं से त्रस्त मनुष्य की व्यथा कथा, चंद्रकांता के लेखन का केंद्र है और एक बेहतर व्यक्ति एवं बेहतर समाज उनकी उम्मीद है। लिखना चंद्रकांता की विवशता भी और आतंरिक जरूरत भी है। इसी के द्‌वारा चंद्रकांता जीवन और जगत के अनसुलझे प्रश्नों, विड़ंबनाओं के उत्तर खोजती है। गलत का अस्विकार कर सही रास्ते तलाशती हैं।

1.2.6 संप्रति -

आप हरियाणा के गुड़गांव में हैं। घर परिवार संभालते हुए स्वतंत्र लेखन कर रही हैं।

निष्कर्ष -

उपन्यासकार, कहानीकार, कवयित्री चंद्रकांता का जीवन अंधेरे से प्रकाश की यात्रा है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी लेखिका उस गड्ढ़े से स्वयं अपना सेतु बनाकर बाहर आयी हैं। जिसमें स्थिति ने उन्हें मिटा दिया था।

अपने लेखन में लेखिका ने जीवनानुभव को लेखनाधार बना दिया है। लेखिका का 'स्व' किसी-न-किसी रूप में हर एक का 'स्व' है। अत: कोई संवेदनशील पाठक उनके उपन्यासों एवं कहानियों में अपनी तस्वीर कहीं-न-कहीं अवश्य देख सकता है।

उन्होंने अपने कहानी और उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज विदेश जानेवाले भारतीय लोगों का चित्रण किया है। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, परिस्थितियों को चित्रित किया है।

अनुभूति की प्रामाणिकता और अभिव्यक्ति की क्षमता के कारण स्वातंत्र्योत्तर कालीन लेखिकाओं में या हिंदी उपन्यासों एवं कहानी क्षेत्र में चंद्रकांता का स्थान विशेष है।

संदर्भ सूची

1. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, भूमिका, पृ. 7
2. वही, पृ. 4
3. वही, मेरे प्रेरणा स्रोत, वैचारिकी संकलन मई, 1997, पृ. 68
4. वही, सूरज उगने तक, अपने बारे में / भूमिका, पृ. 4
5. वही, मेरे प्रेरणा स्रोत, वैचारिकी संकलन मई, 1997, पृ. 67